रमणीया की सृष्टि : ऐषा

संस्कृते परिचयः (Introduction)

(विद्यालयस्य प्राङ्गणे रङ्गमञ्चः। नटः नटी च प्रविशतः)

उभौ (करौ बद्ध्वा) नमः सर्वेभ्यः। अस्माकं विद्यालयस्य प्राङ्गणे भवतां हार्दिकम् अभिनन्दनम्।

नटः अद्य जूनमासस्य पञ्चमी तारिका।

नटी आम् सत्यम्। अद्य तु विश्वपर्यावरणदिवसः।

उभौ एवम्। अस्मिन् शुभावसरे वयम् रम्यां सृष्टिम् अधिकृत्य एकस्याः लघुनाटिकायाः प्रस्तुतिं करिष्यामः।

नटी इदं तु सत्यमेव यत् इयं सृष्टिः अति सौन्दर्यमयी अस्ति।

नटः अतः परस्परं कलहेन विवादेन एषा दूषिता न कर्त्तव्या।

नटी सर्वेषाम् एव अत्र महत्त्वं विद्यते।

नटः कोऽपि इह संसारे कनिष्ठः वरिष्ठः वा नास्ति।

उभौ सर्वे समानाः।

नटी प्रकृतिः माता सर्वान् स्नेहेन परिपालयति।

उभौ अतः प्रस्तूयते लघुनाटिका **'रमणीया हि सृष्टिः एषा।'**

(गच्छतः)

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

(विद्यालय के परिसर में रंगमंच है। नट और नटी मंच पर प्रवेश करते हैं।)

दोनों (हाथ जोड़कर) सबको नमस्कार। हमारे विद्यालय के परिसर में आप सबका हार्दिक स्वागत है।

नट आज जून मास की पाँच तारीख है।

नटी हाँ, यह सच है। आज तो विश्व पर्यावरण दिवस है।

दोनों ऐसा ही है। इस शुभ अवसर पर हम सुन्दर सृष्टि को आधार बनाकर एक छोटी-सी नाटिका की प्रस्तुति करेंगे।

नटी यह तो सच है कि यह सृष्टि बहुत ही सुन्दर है।

नट इसलिए आपस में लड़ाई से, विवाद से इसे खराब नहीं करना चाहिए।

नटी सबका ही यहाँ महत्त्व है।

नट कोई भी इस संसार में छोटा या बड़ा नहीं है।

दोनों सभी समान हैं।

नटी प्रकृति माता सभी को प्यार से पालती है।

दोनों इसलिए एक छोटी नाटिका प्रस्तुत है। **'यह सृष्टि निश्चय ही बहुत सुन्दर है।'**

(दोनों चले जाते हैं।)

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

रङ्गमञ्चः–नाट्यमञ्चः, जहाँ नाटक आदि खेले जाते हैं (stage)। **तारिका**–दिनाङ्कः, तिथि (date)। **कनिष्ठ**–लघुः, छोटा (junior)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

प्राङ्गणे – प्राम् + गणे (परसवर्ण सन्धिः)।
शुभावसरे – शुभ + अवसरे (दीर्घसन्धिः)।
कोऽपि – कः + अपि (विसर्गसन्धिः)।

समासाः (Compounds)

शुभावसरे – शुभे अवसरे (कर्मधारयः)।
हार्दिकम् अभिनन्दनम् – हार्दिकाभिनन्दनम् (कर्मधारयः)।
रङ्गमञ्चः – रङ्गाय मञ्चः (चतुर्थी तत्पुरुषः)।
लघुनाटिकायाः – लघ्वी नाटिका, तस्याः (कर्मधारयः)।

प्रत्ययाः (Suffixes)

बद्ध्वा – बध् + क्त्वा।
अभिनन्दनम् – अभि + नन्द् + ल्युट्।
दूषिता – दूषित + टाप्।
कर्त्तव्या – कृ + तव्यत् + टाप्।
महत्त्वम् – महत् + त्व।
रमणीया – रम् + अनीयर् + टाप्।
वरिष्ठः – वृञ् + इष्ठन्।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) रङ्गमञ्चे कति पात्रे स्तः?
(*ii*) का स्नेहेन पालयति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) सृष्टिः केन दूषिता न कर्त्तव्या?
(*ii*) का सौन्दर्यमयी अस्ति?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'परिपालयति' इति क्रियायाः कर्तृपदम् किम्?
(क) माता (ख) प्रकृतिः (ग) भार्या (घ) पुत्री

(*ii*) 'शुभे अवसरे' इति अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?
(क) शुभः (ख) अवसरे (ग) शुभे (घ) अवसरः

(*iii*) 'एषा' इति सर्वनामपदस्य प्रयोगः कस्मै अभवत्?
(क) मात्रे (ख) तस्यै (ग) बालिकायै (घ) सृष्ट्यै

(*iv*) 'विश्व पर्यावरणदिवसः' कस्मिन् मासे मन्यते?
(क) मई मासे (ख) जून मासे (ग) अप्रैल मासे (घ) जुलाई मासे

उत्तराणि– (I) (*i*) द्वे (*ii*) प्रकृतिः।
(II) (*i*) सृष्टिः कलहेन विवादेन च दूषिता न कर्त्तव्या। (*ii*) सृष्टिः सौन्दर्यमयी अस्ति।
(III) (*i*) (ख) प्रकृतिः (*ii*) (ग) शुभे (*iii*) (घ) सृष्ट्यै (*iv*) (ख) जून मासे।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) अद्य जून मासस्य **पञ्चमी** तारिका। (*ii*) **प्रकृतिः माता** सर्वान् स्नेहेन पालयति। (*iii*) **रमणीया** हि सृष्टिः एषा। (*iv*) रङ्गमञ्चे **नटी नटः च** प्रविशतः। (*v*) अद्य **विश्व पर्यावरणस्य** दिवसः वर्तते।

उत्तराणि–(*i*) का (*ii*) का (*iii*) कीदृशी (*iv*) कौ (*v*) कस्य।

विपर्यय चयनं कुरुत लिखत च–

(क)	(ख)
1. स्नेहेन	(क) नटः
2. वरिष्ठः	(ख) कुरूपा
3. नटी	(ग) शुद्धा
4. दूषिता	(घ) तिरस्कारेण
5. सौन्दर्यमयी	(ङ) कनिष्ठः

उत्तराणि– 1. (घ) तिरस्कारेण 2. (ङ) कनिष्ठः 3. (क) नटः 4. (ग) शुद्धा 5. (ख) कुरूपा।

रमणीया हि सृष्टिः एषा
(निश्चय से यह सृष्टि बहुत सुन्दर है)

(1)

[स्थानं–सरस्तीरम्! समयः-प्रभातवेला। तत्र राजहंसः हंसी च विहरतः। नेपथ्ये काकध्वनिः श्रूयते।]

राजहंसः अये! किन्नु खलु सरस्तीरे विहरति मयि केनापि कर्कशैः 'का का' शब्दैः वातावरणम् आकुलीक्रियते?

राजहंसी भर्तः! काकात् अन्यः को भवितुमर्हति? अस्य वर्णः अपि कृष्णः, कर्म अपि कृष्णम्। मेध्यम् अमेध्यं सर्वमेव भक्षयति। कर्णकटुशब्दैः–

काकः (प्रविश्य, सक्रोधम्) आः किम् उक्तवती भवती? यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि श्रीरामस्य वर्णः कीदृशः? श्रीवासुदेवस्य वर्णः कीदृशः? मुग्धे! अहं तु अतीव कर्तव्यपरायणः। प्रभाते 'का-का' ध्वनिना सुप्तान् प्रबोधयामि कर्मसु च विनियोजयामि।

राजहंसः हुं! किमनेन? एतत् कार्यं तु कुक्कुटोऽपि करोति।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

[**स्थान**–सरोवर का किनारा। समय–सुबह का समय। वहाँ राजहंस और हंसी घूम रहे हैं। परदे के पीछे कौवे की आवाज सुनाई देती है।]

राजहंस अरे! मेरे द्वारा सरोवर के किनारे घूमते हुए किसके द्वारा कठोर 'काँव-काँव' शब्दों से वातावरण को दूषित किया जा रहा है।

राजहंसी स्वामी! कौवे के अतिरिक्त दूसरा कौन हो सकता है। इसका रंग भी काला होता है और इसका कार्य भी काला होता है। पवित्र-अपवित्र (शुद्धाशुद्ध) सबको खाने वाला है। कानों में चुभने वाले शब्दों से... (वातावरण को दूषित कर रहा है।)

कौआ (प्रवेश करके गुस्से से) अरे, क्या कह रही हैं आप? यदि मैं काले रंग का हूँ तो भगवान श्रीराम का रंग कैसा है? भगवान श्रीकृष्ण का रंग कैसा है? अरी भोली! मैं तो बड़ा कर्त्तव्यनिष्ठ हूँ। प्रातःकाल 'काँव-काँव' की ध्वनि से सोए हुए को जगाता हूँ और कार्यों में लगाता हूँ।

राजहंस हूँ! इससे क्या? यह कार्य तो मुर्गा भी कर देता है।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

नेपथ्ये–परोक्षे, पर्दे के पीछे (Back ground)। **मेध्यम्**–शोभनम्, अच्छा (Good)। **प्रविश्य**–प्रवेशं कृत्वा, प्रवेश करके (After entry)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

सरस्तीरम् – सरः + तीरम् (विसर्गसन्धिः)।
कुक्कुटोऽपि – कुक्कुटः + अपि (पूर्वरूप सन्धिः)।
अतीव – अति + इव (दीर्घसन्धिः)।
किन्नु – किम् + नु (परसवर्ण सन्धिः)।

समासाः (Compounds)

सरस्तीरम् – सरसः तीरम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
प्रभातवेला – प्रभातस्य वेला (षष्ठी तत्पुरुषः)।
काकध्वनिः – काकस्य ध्वनिः (षष्ठी तत्पुरुषः)।

राजहंस: च हंसी च – राजहंसौ (द्वन्द्व:)।
सक्रोधम् – क्रोधेन सह (अव्ययीभाव:)।
कर्तव्यपरायण: – कर्तव्ये परायण: (सप्तमी तत्पुरुष:)।
अमेध्यम् – न मेध्यम् (नञ् तत्पुरुष:)।

प्रत्यया: (Suffixes)

विहरति – वि + हृ + शतृ। भवती – भवत् + ङीप् मुग्धे – मुग्ध + टाप्।
उक्तवती – वच् + क्तवतु + ङीप्। भवितुम् – भू + तुमुन्।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) 'मेध्यम्' अस्य विलोमपदम् गद्यांशात् एव लिखत। (*ii*) काकस्य वर्ण कीदृश: भवति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) क: कर्त्तव्यपरायण: अस्ति? (*ii*) काकात् अन्य: सुप्तान् क: प्रबोधयति?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'कर्कशै:' इति विशेषण-पदस्य विशेष्यपदम् किम्?
(क) पदै: (ख) स्वरै: (ग) शब्दै: (घ) का-का

(*ii*) 'मयि' इति सर्वनामपदस्य प्रयोग: कस्मै अभवत्?
(क) राजहंसाय (ख) काकाय (ग) कोकिलाय (घ) बकाय

(*iii*) 'ध्वनिना' इति पदम् कस्याम् विभक्तौ अस्ति?
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी

(*iv*) 'क्रोधेन सह' इति स्थाने किं पदम् प्रयुक्तम्?
(क) क्रोध सह (ख) सक्रोध: (ग) सुक्रोध: (घ) सक्रोधम्

(*v*) 'कुक्कुटोऽपि' इति पदस्य सन्धिच्छेदं कृत्वा लिखत।
(क) कुक्कुट + अपि (ख) कुक्कुटे + अपि (ग) कुक्कुट: + अपि (घ) कुक्कुटौ + अपि

उत्तराणि– (I) (*i*) अमेध्यम् (*ii*) कृष्ण:।
(II) (*i*) काक: कर्त्तव्यपरायण: अस्ति। (*ii*) कुक्कुट: काकात् अन्य: सुप्तान् प्रबोधयति।
(III) (*i*) (ग) शब्दै: (*ii*) (क) राजहंसाय (*iii*) (ख) तृतीया (*iv*) (घ) सक्रोधम् (*v*) (ग) कुक्कुट: + अपि।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) अहम् **सुप्तान्** प्रबोधयामि। (*ii*) काकस्य **कर्म** अपि कृष्णम्।
(*iii*) नेपथ्ये **काकध्वनि:** श्रूयते। (*iv*) **अहम्** तु अतीव कर्तव्यपरायण:।

उत्तराणि–(*i*) कान् (*ii*) किम् (*iii*) का (*iv*) क:।

(2)

काक: *(विहस्य) कुक्कुट:! अरे! अद्य कुत: कुक्कुटा: नगरेषु; अहमेव सर्वत्र सुलभ:।*
राजहंसी *भो भो वाचाल! स्वीयै: कटुभि: क्वणितै: जनजागरणात् अन्यत् तु किमपि न करोषि।*
काक: *अहो अज्ञानं भवत्या:। अरे! यस्य गृहस्य भित्तौ स्थित्वा आलपामि, जना: प्रियस्य आगमनसंकेतं मत्वा हृष्यन्ति। किं बहुना। अहम् तु एतादृश: सत्यप्रिय: यत् मातर: शिशून् कथयन्ति–"अनृतं वदसि चेत् काक: दशेत्।" अस्माकम् ऐक्यं तु जगत्प्रसिद्धम्। सर्वथा जागरुकोऽहं छात्राणाम् कृते आदर्श: एव। किं न श्रुतं काकचेष्टा, बकोध्यानम्.....*

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

कौआ (हँसकर) मुर्गा! अरे! आज नगरों में मुर्गे कहाँ? मैं ही सभी जगह मिलता हूँ।
राजहंसी अरे, बहुत अधिक बोलने वाले! अपने कठोर शब्दों से लोगों को जगाने के अतिरिक्त और क्या कर सकते हो।
कौआ अहो, यही तो आपकी अज्ञानता है। अरे! मैं जिस घर की दीवार पर बैठकर बोलता हूँ, लोग अपने प्रियजनों के आने का संकेत मानकर खुश होते हैं। ज्यादा क्या कहूँ। मैं तो ऐसा सच बोलने वाला हूँ कि माताएँ अपने बच्चों को कहती हैं, "यदि झूठ बोलोगे तो कौआ काट लेगा।" हमारी एकता तो सारे संसार में प्रसिद्ध है। मैं हमेशा जागरूक छात्रों के लिए आदर्शस्वरूप ही हूँ। क्या आपने यह नहीं सुना–कौए की चेष्टा और बगुले का ध्यान....

शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

वाचाल–अतिवक्ता, अधिक बोलने वाला (Talkative)। **अनृतम्**–मिथ्या, झूठ (Lie)। **सर्वदा**–सर्वदा, हमेशा (Forever)।

सन्धि-विच्छेद: (Disjoin Sandhi)

जागरूकोऽहम्– जागरूको + अहम् (पूर्वरूप सन्धि:)।
बकोध्यानम् – बक: + ध्यानम् (विसर्ग सन्धि:)।

समासा: (Compounds)

अज्ञानम् – न ज्ञानम् (नञ् तत्पुरुष:)। सत्यप्रिय: – सत्यं प्रियं यस्मै स: (बहुव्रीहि:)।
जगत्प्रसिद्धम् – जगति प्रसिद्धम् (सप्तमी तत्पुरुष:)। सुलभ: – सुगमतया लभते य: स: (बहुव्रीहि:)।
आगमनसंकेतम् – आगमनस्य संकेतम् (षष्ठी तत्पुरुष:)। अनृतम – न ऋतम् (नञ् तत्पुरुष:)।
काकचेष्टा – काकस्य चेष्टा (षष्ठी तत्पुरुष:)।

प्रत्यया: (Suffixes)

स्थित्वा – स्था + क्त्वा। मत्वा – मन् + क्त्वा। विहस्य – वि + हस् + ल्यप्।
श्रुतम् – श्रु + क्त। भवत्या: – भवान् + ङीप्

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) के नगरेषु सुलभा: न सन्ति? (*ii*) क: छात्राणाम् कृते आदर्श:?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) मातर: शिशून् किम् कथयन्ति? (*ii*) केषाम् ऐक्यं जगत्प्रसिद्धम्?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) नाट्यांशे 'अहम्' पदम् कस्मै प्रयुक्तम्?
(क) हंसौ (ख) राजहंसाय (ग) मयूराय (घ) काकाय

(*ii*) 'कटुभिः' इति कस्य विशेषणम्?
(क) क्वणितैः पदस्य (ख) स्वरैः पदस्य (ग) वाक्यैः पदस्य (घ) वचनैः पदस्य

(*iii*) 'मत्वा' इति पदे का मूलधातुः?
(क) मत् (ख) मन् (ग) मत (घ) मा

(*iv*) 'न ऋतम्' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) अनऋतम् (ख) अऋतम् (ग) अनृतम् (घ) अमृतम्

(*v*) 'कथयन्ति' इति क्रियायाः कर्तृपदम् किम्?
(क) पितरः (ख) मातरः (ग) भ्रातरः (घ) गुरवः

उत्तराणि– (I) (*i*) कुक्कुटाः (*ii*) काकः।
(II) मातरः शिशून् कथयति–अनृतम् वदसि चेत् काकः दशेत्। (*i*) काकानाम् ऐक्यं जगत्प्रसिद्धम्।
(III) (*i*) (घ) काकाय (*ii*) (क) क्वणितैः पदस्य (*iii*) (ख) मन् (*iv*) (ग) अनृतम् (*v*) (ख) मातरः।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) **काकः** एव सर्वत्र सुलभः वर्तते।
(*ii*) **मातरः** शिशून् कथयन्ति।
(*iii*) अस्माकम् **ऐक्यं** जगति प्रसिद्धं वर्तते।
(*iv*) **अनृतं** वदसि चेत् काकः दशेत्।

उत्तराणि–(*i*) कः (*ii*) काः (*iii*) किम् (*iv*) किम्।

राजहंसः– विरम विरम। श्रूयतां यत्. जनैः सर्वदा गीयते तव विषये–

(1) काकस्य गात्रं यदि काञ्चनस्य, माणिक्यरत्नं यदि चञ्चुदेशे।
एकैकपक्षे ग्रथितं मणीनां, तथापि काको न तु राजहंसः॥1॥

अपि च

(2) हंसः श्वेतः बकः श्वेतः, को भेदः बकहंसयोः।
नीरक्षीरविवेके तु हंसो हंसः बको बकः॥2॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

राजहंस–रुको, रुको। तुम्हारे विषय में लोग जो गाते हैं, उसे सुनो।

(1) कौवे का शरीर यदि सोने का हो, उसके चोंच में यदि माणिक्य रत्न हों, एक-एक पंख को मणियों से गूँथा गया हो फिर भी कौआ (कौआ ही होता है) राजहंस नहीं होता॥1॥

(2) हंस और भी सफेद होता है बगुला भी सफेद होता है। बगुले और हंस में क्या अंतर है? पानी और दूध को अलग करते समय हंस, हंस ही होता है और बगुला, बगुला ही॥2॥

अन्वयः (Prose-order)

काकस्य गात्रं यदि काञ्चनस्य, माणिक्यरत्नं यदि चञ्चुदेशे।
एकैकपक्षे ग्रथितं मणीनां, तथापि काको न तु राजहंसः॥1॥

यदि (*i*) .... गात्रम् काञ्चनस्य, यदि (*ii*) .... माणिक्यरत्नम्, एकैकपक्षे (*iii*) .... ग्रथितम्, तथापि (सः) काकः (एव) न तु (*iv*) .... ॥1॥

मञ्जूषा– चञ्चुदेशे, राजहंसः, काकस्य, मणीनाम्।

उत्तराणि–(*i*) काकस्य (*ii*) चञ्चुदेशे (*iii*) मणीनाम् (*iv*) राजहंसः

अन्वयः (Prose-order)

हंसः श्वेतः बकः श्वेतः, को भेदः बकहंसयोः।
नीरक्षीरविवेके तु हंसो हंसः बको बकः॥2॥

हंसः श्वेतः (*i*) .... श्वेतः (*ii*) .... कः भेदः? नीरक्षीरविवेके तु (*iii*) .... हंसः, बकः (*iv*) .... ॥2॥

मञ्जूषा– बकहंसयोः, बकः, हंसः, बकः

उत्तराणि–(*i*) बकः (*ii*) बकहंसयोः (*iii*) हंसः (*iv*) बकः।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

काञ्चनस्य–स्वर्णस्य, सोने का (Of gold)। **ग्रथितम्**–जटितम्, जड़े हुए (Studded)। **नीरक्षीरविवेके**–जलस्य दुग्धस्य च भेदस्य बुद्धिः विवेचनात्मक बुद्धि (Discriminating power)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

काकस्य गात्रं यदि काञ्चनस्य, माणिक्यरत्नं यदि चञ्चुदेशे।
एकैकपक्षे ग्रथितं मणीनां, तथापि काको न तु राजहंसः॥1॥

अस्य श्लोकस्य भावः अस्ति–यदि काकस्य शरीरं (*i*) .... भवेत् तस्य चञ्चुदेशे (*ii*) .... अपि भवेत् तथापि सः राजहंसः न मन्यते अपितु काकः एव भवति। एवमेव यदि (*iii*) .... पक्षाः मणिभिः अपि ग्रथिताः भवेयुः तथापि सः (*iv*) .... एव तिष्ठति। राजहंसः तु भवितुं नार्हति॥1॥

मञ्जूषा– | काकः, स्वर्णस्य, काकस्य, माणिक्यरत्नम्। |

उत्तराणि–(*i*) स्वर्णस्य (*ii*) माणिक्यरत्नम्, (*iii*) काकस्य (*iv*) काकः।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

अपि च–

हंस श्वेतः बकः श्वेतः, को भेदः बकहंसयोः।
नीरक्षीरविवेके तु हंसो हंसः बको बकः॥2॥

अस्य भावोऽस्ति–यथा हंसस्य वर्णः (*i*) ………………… भवति तथा बकस्य वर्णः अपि श्वेतः भवति, तदा तयोः (*ii*) ………………… कः भेदः भवति। अस्य ज्ञानम् नीरक्षीरविवेके एव भवति। अर्थात् (*iii*) ………………… नीरक्षीरविवेकी भवति परन्तु (*iv*) ………………… एतादृशम् सामर्थ्यम् न भवति॥2॥

मञ्जूषा– | बके, बकहंसयोः, श्वेतः, हंसः |

उत्तराणि–(*i*) श्वेतः (*ii*) बकहंसयोः (*iii*) हंसः (*iv*) बके

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

एकैक – एक + एक (वृद्धि सन्धिः)।
तथापि – तथा + अपि (दीर्घ सन्धिः)!
काको न – काकः + न (विसर्ग सन्धिः)।

समासाः (Compounds)

माणिक्यरत्नम् – माणिक्यम् च रत्नम् च तयोः समाहारः (समाहार द्वन्द्वः)। बकहंसयोः – बके च हंसे च (द्वन्द्वः)।
नीरक्षीरविवेके – नीरम् च क्षीरम् च (द्वन्द्वः) तयोः विवेके (षष्ठी तत्पुरुषः) चञ्चुदेशे – चञ्च्वोः देशे (षष्ठी तत्पुरुषः)।

प्रत्ययः (Suffix)

ग्रथितम् – ग्रथ् + क्त।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) श्लोकौ कः पठति? (*ii*) कः राजहंसः भवितुम् न शक्नोति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) कदा हंसः, हंसः एव भवति? (*ii*) श्वेतः कः भवति?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'सदैव' इत्यर्थे अत्र किम् पदम् प्रयुक्तम?
(क) सदा (ख) सर्वदा (ग) यत् (घ) सर्वथा

(*ii*) 'तव' इति सर्वनामपदस्य प्रयोगः कस्मै अभवत्?
(क) काकाय (ख) हंसाय (ग) बकाय (घ) मयूराय

(*iv*) 'राजहंसः' इति पदे कः समासः?
(क) तत्पुरुषः (ख) कर्मधारयः (ग) बहुव्रीहिः (घ) द्वन्द्वः

(*iv*) काकः राजहंसः न भवति। अत्र क्रियापदं किम्?
(क) काकः (ख) राजहंसः (ग) हंसः (घ) भवति

उत्तराणि– (I) (*i*) राजहंसः। (*ii*) काकः।
(II) (*i*) नीरक्षीरविवेके हंसः, हंसः एव भवति (*ii*) हंसः श्वेतः भवति।
(III) (*i*) (ख) सर्वदा (*ii*) (क) काकाय (*iii*) (ख) कर्मधारयः (*iv*) (घ) भवति।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) **काकस्य** गात्रं काञ्चनस्य भवेत्। (*ii*) **नीरक्षीरविवेके** हंसो हंसः भवति।
(*iii*) जनैः सर्वदा **तव** विषये गीयते। (*iv*) हंसः **श्वेतः** भवति।

उत्तराणि–(*i*) कस्य (*ii*) कदा (*iii*) कस्य (*iv*) कीदृशः।

(4)

बकः *(प्रविश्य, स्वपक्षौ अवधूय) कथं माम् अपि अधिक्षिपसि। किं ते महत्त्वम्? वर्षतौं तु मानसं पलायसे। अहम् एव अत्र वृष्टेः अभिनन्दनं करोमि। कीदृशी तव मैत्री? आपत्काले सरांसि त्यक्त्वा दूरं व्रजसि। वस्तुतः अहमेव शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलं ध्यानमग्नः 'स्थितप्रज्ञ' इव तिष्ठामि। दुग्धधवला मे पक्षाः। न जाने कथं माम् अपरिगणयन्तः जनाः चित्रवर्णं अहिभुजं मयूरं 'राष्ट्र-पक्षी' इति मन्यन्ते। अहमेव योग्यः–*

मयूरः *(प्रविश्य साट्टहासम्) सत्यं सत्यम्। अहमेव राष्ट्रपक्षी। को न जानाति तव ध्यानावस्थाम्? मौनं धृत्वा वराकान् मीनान् छलेन अधिगृह्य, क्रूरतया भक्षयसि। धिक् त्वाम्! अवमानितं खलु सर्वं पक्षिकुलं त्वया।*

काकः *रे सर्पभक्षक! नर्तनात् अन्यत् किम् अपरं जानासि?*

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

बगुला (प्रवेश करके अपने पंखों को फड़फड़ाकर) मेरी भी क्यों निंदा करते हो? तुम्हारा महत्त्व क्या है? वर्षा ऋतु के आगमन पर तुम मानसरोवर भाग जाते हो, मैं ही यहाँ वर्षा का स्वागत करता हूँ। तुम्हारी मित्रता कैसी है? आपत्ति के समय सरोवरों को त्यागकर दूर भाग जाते हो। वास्तव में मैं ही ठण्डे जल में बहुत लम्बे समय तक निश्चल रूप से ध्यान में लीन हुए स्थिर बुद्धि वाले योगी के समान खड़ा रहता हूँ। मेरे पंख दूध के समान सफेद हैं। मुझे यह समझ नहीं आता कि लोग मेरी परवाह न करते हुए विचित्र रंगों वाले साँपभक्षी मोर को राष्ट्रपक्षी क्यों मानते हैं। मैं ही योग्य हूँ–

मोर (प्रवेश करके ठहाके के साथ) सच है, सच है। मैं ही राष्ट्रीय पक्षी हूँ। तुम्हारी ध्यानावस्था को कौन नहीं जानता? चुप्पी धारण करके बेचारी मछलियों को छल से पकड़कर बड़ी निर्दयता से खाते हो। तुम्हें धिक्कार है। तुमने तो सब पक्षी समूह को अपमानित किया है।

कौआ अरे मोर! नाचने के अतिरिक्त और तुम क्या जानते हो।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

अवधूय–कम्पयित्वा, हिलाकर (Having shaken)। **अधिक्षिपसि**–तिरस्करोषि, अपमानित करते हो (Causing insult)। **वराकान्**–दयनीयान्, बेचारों को (To the pitiable ones)। **क्रूरतया**–निर्दयतया, निर्दयता से (Brutally)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

वर्षर्तौ – वर्षा + ऋतौ (गुणसन्धिः)।
ध्यानावस्थाम् – ध्यान + अवस्थाम् (दीर्घसन्धिः)।
साट्टहासम् – स + अट्टहासम् (दीर्घसन्धिः)।

समासाः (Compounds)

वर्षर्तौ – वर्षायाः ऋतौ (षष्ठी तत्पुरुषः)।
ध्यानमग्नः – ध्याने मग्नः (सप्तमी तत्पुरुषः)।
स्थितप्रज्ञः – स्थिता प्रज्ञा यस्य सः (बहुव्रीहिः)।
अपरिगणयन्तः – न परिगणयन्तः (नञ् तत्पुरुषः)।
अहिभुजम् – अहिम् भुञ्जते इति, तम् (उपपद तत्पुरुषः)।
साट्टहासम् – अट्टहासेन सह (अव्ययीभावः)।
ध्यानावस्थाम् – ध्यानस्य अवस्थाम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
पक्षिकुलम् – पक्षिणाम् कुलम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
सर्पभक्षक – सर्पाणाम् भक्षक (षष्ठी तत्पुरुषः)।

अविचलम् – न विचलम् (नञ् तत्पुरुषः)।
दुग्धधवलाः – दुग्ध इव धवलाः (कर्मधारयः)।
राष्ट्रपक्षी – राष्ट्रस्य पक्षी (षष्ठी तत्पुरुषः)।
शीतले जले – शीतलजले (कर्मधारयः)।

प्रत्ययाः (Suffixes)

प्रविश्य	– प्र + विश् + ल्यप्।	त्यक्त्वा	– त्यज् + क्त्वा।
अवधूय	– अव + धू + ल्यप्।	महत्त्वम्	– महत् + त्व।
अभिनन्दनम्	– अभि + नन्द् + ल्युट्।	मैत्री	– मित्र + ङीप्
अपरिगणयन्तः	– अ + परि + गण् + शतृ।	अवमानितम्	– अव + मन् + क्त।
पक्षी	– पक्ष + इन्।	क्रूरतया	– क्रूर + तल् (तृतीया)।
अधिगृह्य	– अधि + ग्रह् + ल्यप्।		

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कः वृष्टेः अभिनन्दनम् करोति? (*ii*) अहिभुजः कः अस्ति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) बकः छलेन किम् करोति? (*ii*) बकः कस्य निन्दां करोति?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'जनाः' अस्य कर्तृपदस्य क्रियापदम् किम्?
(क) ज्ञायन्ते (ख) क्रियन्ते (ग) मन्यन्ते (घ) पठ्यन्ते

(*ii*) 'अन्यत्' इति पदस्य पर्यायपदम् किम्?
(क) अपरम् (ख) परम् (ग) द्वितीयम् (घ) अन्यम्

(*iii*) 'त्वया' इति सर्वनामपदस्य प्रयोगः कस्मै अभवत्?
(क) बकाय (ख) कोकिलाय (ग) मयूराय (घ) राजहंसाय

(*iv*) 'महत्त्वम्' इति पदे कः प्रत्ययः?
(क) त्व (ख) त्वम् (ग) तव (घ) क्त

(*v*) 'मे' इति पदे कः मूलशब्दः?
(क) मत् (ख) युष्मद् (ग) अस्मद् (घ) मद्

(*vi*) 'शीतले जले' इति अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?
(क) शीतलं (ख) शीतले (ग) जलं (घ) जले

(*vii*) 'सरांसि' पदं कस्मिन् लिङ्गे अस्ति?
(क) स्त्रीलिङ्गे (ख) पुलिङ्गे (ग) नपुंसकलिङ्गे (घ) कस्मिन्नपि न

उत्तराणि– (I) (*i*) बकः (*ii*) मयूरः।

(II) (*i*) बकः छलेन वराकान् मीनान् अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयति। (*ii*) बकः मयूरस्य निन्दां करोति।

(III) (*i*) (ग) मन्यन्ते (*ii*) (क) अपरम् (*iii*) (क) बकाय (*iv*) (क) त्व (*v*) (ग) अस्मद् (*vi*) (घ) जले (*vii*) (ग) नपुंसकलिङ्गे।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) अहमेव **राष्ट्रपक्षी** अस्मि। (*ii*) वर्षर्तौ तु **मानसं** पलायसे। (*iii*) सर्वं **पक्षिकुलम्** त्वया अवमानितम्। (*iv*) **जनाः** मयूरं 'राष्ट्रपक्षी' मन्यन्ते। (*v*) अहं **वृष्टेः** अभिनन्दनं करोमि।

उत्तराणि–(*i*) कः (*ii*) कुत्र (*iii*) कम् (*iv*) के (*v*) कस्याः।

मयूरः *श्रूयतां श्रूयताम्! मम नृत्यं तु प्रकृतेः आराधना। पश्य! चारुवर्तुलचन्द्रिकाशोभितानां मम पिच्छानाम् अपूर्वं सौन्दर्यम्। मम केकारवं श्रुत्वा कोकिलः अपि लज्जते। मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा एव अहं पक्षिराजः कृतः।*

कोकिलः *(प्रविश्य) रे मयूर! अलम् अतिविकत्थनेन। मधुमासे आम्रवृक्षे स्थित्वा यदा अहं पञ्चमस्वरेण गायामि तदा श्रोतारः कथयन्ति–*

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः, को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते, काकः काकः पिकः पिकः॥3॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

मोर सुनो, सुनो! मेरा नाच तो प्रकृति की पूजा है। देखो! सुन्दर गोल अर्धचन्द्राकार की भाँति सुशोभित मेरे पंखों की अपूर्व सुंदरता। मेरी मधुर ध्वनि को सुनकर कोयलें भी शर्माती हैं। मेरे सिर पर राजमुकुट की भाँति चोटी को स्थापित करने वाले विधाता ने मुझे ही पक्षियों का राजा बनाया है।

कोयल (प्रवेश करके) अरे मोर! इस आत्मस्तुति को समाप्त कर दे। वसन्त ऋतु में आम के पेड़ पर बैठकर जब मैं पञ्चम स्वर से गाती हूँ तो सुनने वाले कहते हैं–

कौवा भी काला होता है, कोयल भी काली होती है। कौवे और कोयल में क्या भेद है? वसन्त ऋतु आने पर कौवा, कौवा ही होता है और कोयल, कोयल ही होती है।

अन्वयः (Prose-order)

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः, को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते, काकः काकः पिकः पिकः॥3॥

काकः (*i*) .... पिकः कृष्णः, (*ii*) .... कः भेदः? वसन्तसमये (*iii*) .... काकः काकः (*iv*) .... पिकः॥3॥

मञ्जूषा– पिककाकयोः, पिकः, कृष्णः, प्राप्ते

उत्तराणि–(*i*) कृष्णः (*ii*) पिककाकयोः (*iii*) प्राप्ते (*iv*) पिकः।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

आराधना–अर्चना, पूजा (Prayer)। **चारुवर्तुलचन्द्रिकाशोभितानाम्**–सुन्दरगोलार्धचन्द्राकारैः शोभितानाम्, सुन्दर गोलार्धचन्द्राकार से सुशोभित (Adorned with beautiful round and half moon)। **पिच्छानाम्**–मयूरस्य पक्षाणाम्, मोर के पंखों का (Of the peacock's plume)। **अतिविकत्थनेन**–आत्मश्लाघया, आत्मप्रशंसा से (By self-praise)।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

आराधना–अर्चना, पूजा (Prayer)। **चारुवर्तुलचन्द्रिकाशोभितानाम्**–सुन्दरगोलार्धचन्द्राकारैः शोभितानाम्, सुन्दर गोलार्धचन्द्राकार से सुशोभित (Adorned with beautiful round and half moon)। **पिच्छानाम्**–मयूरस्य पक्षाणाम्, मोर के पंखों का (Of the peacock's plume)। **अतिविकत्थनेन**–आत्मश्लाघया, आत्मप्रशंसा से (By self-praise)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः, को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते, काकः काकः पिकः पिकः॥3॥

अर्थात्–पिकस्य काकस्य च वर्णः कृष्णः भवति। परन्तु यदा (*i*) .... आगच्छति तदा पिकस्य मधुरेण स्वरेण ज्ञायते यत् द्वयोः मध्ये कः (*ii*) .... अस्ति अन्यथा द्वयोः एव वर्णः कृष्णः एव भवति। काकस्य स्वरः (*iii*) .... भवति तथापि सः सर्वं वर्षं 'का-का' इति करोति। एतद्विपरीतं (*iv*) .... वर्णः मधुरः कर्णप्रियः च भवति, परन्तु सः केवलं वसन्ते एव कूजति न तु अयथाकालम्।

मञ्जूषा– पिकस्य, वसन्तकालः, भेदः, कर्णकटुः।

उत्तराणि–(*i*) वसन्तकालः (*ii*) भेदः (*iii*) कर्णकटुः (*iv*) पिकस्य।

समासा: (Compounds)

पक्षिराजः – पक्षिणाम् राजः (षष्ठी तत्पुरुषः)। पिककाकयोः – पिके च काके च (द्वन्द्वः)।

प्रत्यया: (Suffixes)

कृतः – कृ + क्त। स्थित्वा – स्था + क्त्वा। प्रविश्य – प्र + विश् + ल्यप्।
प्राप्ते – प्र + आप् + क्त। स्थापयता – स्थाप् + शतृ।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) मयूरस्य पश्चातः कः प्रविशति? (*ii*) केकारवं कस्य ध्वनिः?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) श्रोतारः किम् कथयन्ति? (*ii*) प्रकृतेः आराधना किम्?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'आगते' इत्यर्थे अत्र किम् पदम् प्रयुक्तम्?
(क) प्राप्ते (ख) विगते (ग) उपगते (घ) गते

(*ii*) 'अपूर्वम्' अस्य विशेषणस्य विशेष्यपदम् किम्?
(क) आनन्दम् (ख) सौन्दर्यः (ग) सौन्दर्यम् (घ) सुन्दरताम्

(*iii*) 'विधात्रा' इति कस्य पदस्य विशेष्यः?
(क) एव (ख) अहम् (ग) शिखाम् (घ) स्थापयता

(*iv*) 'कृतः' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
(क) स्थापयता (ख) अहं (ग) विधात्रा (घ) पक्षिराजः

(*v*) 'शिरसि' इति पदम् कस्याम् विभक्तौ?
(क) पञ्चमी (ख) सप्तमी (ग) द्वितीया (घ) षष्ठी

(*vi*) 'पिकस्य च काकस्य च' इति स्थाने किम् पदं प्रयुक्तम्?
(क) पिककाकयोः (ख) पिककाकौ (ग) पिककाके (घ) पिककाकम्

(*vii*) 'श्रोतारः' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?
(क) कथयन्ति (ख) कथयति (ग) कथयतः (घ) कथ्यसि

उत्तराणि– (I) (*i*) पिकः (*ii*) मयूरस्य।

(II) (*i*) श्रोतारः कथयन्ति–काकः कृष्णः पिकः कृष्णः, को भेदः पिककाकयोः। वसन्तसमये प्राप्ते, काकः काकः पिकः पिकः।। (*ii*) मयूरस्य नृत्यं प्रकृतेः आराधना अस्ति।

(III) (*i*) (क) प्राप्ते (*ii*) (ग) सौन्दर्यम् (*iii*) (घ) स्थापयता (*iv*) (ग) विधात्रा (*v*) (ख) सप्तमी (*vi*) (क) पिककाकयोः (*vii*) (क) कथयन्ति।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) **मम** केकारवं श्रुत्वा कोकिलः अपि लज्जते। (*ii*) मम नृत्यं तु **प्रकृतेः** आराधना। (*iii*) **काकः पिकः च** कृष्णौ भवतः। (*iv*) **कोकिलः** एव पञ्चमस्वरेण गायति।

उत्तराणि– (*i*) कस्य (*ii*) कस्याः (*iii*) कौ (*iv*) कः।

(6)

काकः *रे परभृत! अहं यदि तव सन्ततिं न पालयामि तर्हि कुत्र स्युः पिकाः? अतः अहम् एव करुणापरः पक्षिसम्राट् काकः!*

राजहंसः *शान्तं शान्तम्। अहमेव नीरक्षीरविवेकी पक्षिणाम् राजा!*

बकः *धिक् युष्मान्। अहमेव सर्वशिरोमणिः!*

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

कौआ : अरी दूसरों पर पलने वाली! यदि मैं तेरी सन्तान का पालन न करूँ तो कोयलें कहाँ से हों? इसलिए दयाशील मैं ही पक्षियों का राजा कौआ हूँ।

राजहंस : शान्त हो जाओ, शान्त हो जाओ। दूध और पानी को अलग करने का बोध रखनेवाला मैं ही पक्षियों का राजा हूँ।

बगुला : तुम सबको धिक्कार है। मैं ही सबसे श्रेष्ठ हूँ।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

परभृत–अन्यैः पालित, दूसरों द्वारा पालित (Brought up by others)। **स्युः**–भवेयुः, हों (Will)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

करुणापरः – करुणा + अपरः (दीर्घसन्धिः)।

समासाः (Compounds)

पक्षिणाम् राजा – पक्षिराजः (षष्ठी तत्पुरुषः)।
सर्वशिरोमणिः – सर्वेषु शिरोमणिः (सप्तमी तत्पुरुषः)।
सर्वशिरोमणि – सर्वेषाम् शिरोमणिः (षष्ठी तत्पुरुषः)।
पक्षिसम्राट् – पक्षिणाम् सम्राट् (षष्ठी तत्पुरुषः)।

प्रत्ययः (Suffix)

विवेकी – विवेक + इन्।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कः आत्मानम् सर्वशिरोमणिः मानयति? (*ii*) नीरक्षीरविवेकी कः?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

पिकस्य सन्ततिं कः पालयति?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) अत्र 'परभृत' पदम् कस्मै प्रयुक्तम्?
(क) काकाय (ख) पिकाय (ग) बकाय (घ) मयूराय

(*ii*) 'युष्मान्' इति पदे का विभक्तिः?
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) द्वितीया

(*iii*) 'करुणापरः' कस्य विशेषणम्?
(क) बकस्य (ख) काकस्य (ग) हंसस्य (घ) पिकस्य

(*iv*) 'पालयामि' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
(क) अहम् (ख) तर्हि (ग) कुत्र (घ) पिकाः

(*v*) संवादे 'बालकं' पदस्य कः पर्यायः आगतः?
(क) तव (ख) अहम् (ग) सन्ततिं (घ) पिकाः

उत्तराणि– (I) (*i*) बकः (*ii*) हंसः।
(II) पिकस्य सन्ततिं काकः पालयति।
(III) (*i*) (ख) पिकाय (*ii*) (घ) द्वितीया (*iii*) (ख) काकस्य (*iv*) (क) अहम् (*v*) (ग) सन्ततिं।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) अहम् **करुणापरः** काकः अस्मि। (*ii*) अहमेव **सर्वशिरोमणिः**।
(*iii*) अहं तव **सन्ततिं** पालयामि। (*iv*) धिक् **युष्मान्**।

उत्तराणि–(*i*) कीदृशः (*ii*) कीदृशः (*iii*) काम् (*iv*) कान्।

(7)

(ततः प्रकृतिमाता प्रविशिति)

प्रकृतिः (सस्नेहम्) अलम् अलं मिथः कलहेन। अहम् प्रकृतिः एव युष्माकं जननी। यूयं सर्वे एव मम प्रियाः। सर्वेषामेव महत्त्वं विद्यते यथासमयम्। सर्वैः एव मे शोभा। न तावत् कलहेन समयं वृथा यापयेत। मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं कुरुध्यम्। सर्वे मिलित्वा गायन्ति–

आयुष: क्षणमेकोऽपि, न लभ्य: स्वर्णकोटिकै:।
स चेन्निरर्थकं नीत:, का नु हानिस्ततोऽधिका॥4॥
अधुना रमणीया हि, सृष्टिरेषा जगत्पते:।
जीवा: सर्वेऽत्र मोदन्तां, भावयन्त: परस्परम्॥5॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

(उसके बाद प्रकृतिरूपी माता का प्रवेश होता है।)

प्रकृति (प्रेमपूर्वक) आपस में झगड़ा मत करो। मैं प्रकृति ही तुम्हारी माता हूँ। तुम सभी मेरे प्रिय हो। सभी का ही समय अनुसार महत्त्व है। सभी से मेरी शोभा है। लड़ाई में अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिए। मिलकर ही खुश रहो और अपने जीवन को रसमय बनाओ। सभी पक्षी मिलकर गाते हैं–

आयु का एक पल भी करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से भी प्राप्त होने योग्य नहीं है। यदि वह समय व्यर्थ ही गँवा दिया गया तो उसके अधिक निश्चित रूप क्या हानि होगी (अर्थात्) उससे बढ़कर कोई हानि नहीं है॥4॥

निश्चित रूप से विधाता की यह सृष्टि अति सुन्दर है। आपस में सद्भावना रखते हुए यहाँ सभी प्राणी खुश रहें॥5॥

अन्वय: (Prose-order)

आयुष: क्षणमेकोऽपि, न लभ्य: स्वर्णकोटिकै:।
स चेन्निरर्थकं नीत:, का नु हानिस्ततोऽधिका॥4॥

आयुष: एक: (*i*) .... अपि स्वर्णकोटिकै: न (*ii*) .... स चेत् (*iii*) .... नीत:, तत: (*iv*) .... नु हानि: का?॥4॥

मञ्जूषा– लभ्य:, अधिका, क्षणम्, निरर्थकम्

उत्तराणि–(*i*) क्षणम् (*ii*) लभ्य: (*iii*) निरर्थकम् (*iv*) अधिका।

अधुना रमणीया हि, सृष्टिरेषा जगत्पते:।
जीवा: सर्वेऽत्र मोदन्तां, भावयन्त: परस्परम्॥5॥

एषा (*i*) .... सृष्टि: हि अधुना (*ii*) .... सर्वे (*iii*) .... अत्र परस्परम् (*iv*) .... मोदन्ताम्॥5॥

मञ्जूषा– जीवा:, भावयन्त:, जगत्पते:, रमणीया

उत्तराणि–(*i*) जगत्पते: (*ii*) रमणीया (*iii*) जीवा: (*iv*) भावयन्त:।

शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

मिथ:–परस्परम्, आपस में (Within themselves)। **क्षणम्**–पलम्, पल (Moment)। **रमणीया**–सुन्दरी, सुन्दर (Beautiful)। **सृष्टि:**–जगत्, संसार (World)। **मोदन्ताम्**–प्रसीदयन्तु, प्रसन्न रहें (Should be happy)।

संस्कृते भावार्थ: (Summary)

आयुष: क्षणमेकोऽपि, न लभ्य: स्वर्णकोटिकै:।
स चेन्निरर्थकं नीत:, का नु हानिस्ततोऽधिका॥4॥

अस्यभावोऽस्ति अस्माकं (*i*) .... अमूल्यम् अस्ति। अत: अस्माभि: (*ii*) .... प्रत्येकं क्षणस्य सदुपयोग: कर्तव्य:। यतो हि अयं क्षण: (*iii*) .... अपि पुन: लब्धुं न शक्यते। गत: समय: न पुन: आगच्छति। अत: क्षणनाशाद् अधिका काऽपि अन्या (*iv*) .... न अस्ति।

मञ्जूषा– स्वर्णकोटिकै:, आयुष:, जीवनम्, हानि:

उत्तराणि–(*i*) जीवनम् (*ii*) आयुष: (*iii*) स्वर्णकोटिकै: (*iv*) हानि:।

अधुना रमणीया हि, सृष्टिरेषा जगत्पतेः।
जीवाः सर्वेऽत्र मोदन्तां, भावयन्तः परस्परम्॥5॥

अधुना (*i*) .... इयम् सृष्टिः रमणीया (*ii*) .... खलु। अतः अत्र सर्वे (*iii*) .... ईर्ष्या-द्वेषं विस्मृत्य परस्परम् (*iv*) .... प्रसन्नाः भवन्तु।

मञ्जूषा– | मनोहरा, भावयन्तः, ईश्वरस्य, प्राणिनः |

उत्तराणि–(*i*) ईश्वरस्य (*ii*) मनोहरा (*iii*) प्राणिनः (*iv*) भावयन्तः।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

सृष्टिरेषा – सृष्टिः + एषा (विसर्गसन्धिः)।
सर्वेऽत्र – सर्वे + अत्र (पूर्वरूपसन्धिः)।
चेन्निरर्थकम् – चेत् + निरर्थकम् (व्यञ्जनसन्धिः)।
हानिस्ततः – हानिः + ततः (विसर्गसन्धिः)।
ततोऽधिका – ततः + अधिका (पूर्वरूप सन्धि)।

समासाः (Compounds)

निरर्थकम् – अर्थस्य अभावः (अव्ययीभावः)।
सस्नेहम् – स्नेहेन सह (अव्ययीभावः)।
यथासमयम् – समयम् अनतिक्रम्य (अव्ययीभावः)।
जगत्पतेः – जगतः पतेः (षष्ठी तत्पुरुषः)।
स्वर्णकोटिकैः – स्वर्णानाम् कोटिकैः (षष्ठी तत्पुरुष)।

प्रत्ययाः (Suffixes)

प्रकृतिः – प्र + कृ + क्तिन्।
मिलित्वा – मिल् + क्त्वा।
अधिका – अधिक + टाप्।
रमणीया – रम् + अनीयर् + टाप्।
नीतः – नी + क्त।
भावयन्तः – भू + णिच् + शतृ।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कस्य सृष्टिः रमणीया? (*ii*) सर्वे मिलित्वा किम् कुर्वन्ति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) का सर्वेषाम् जननी अस्ति? (*ii*) जीवनं कथम् न यापयेत?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) अत्र के पर्यायद्वयम्?
(क) मिथः–अलम् (ख) अलम्–अलम् (ग) मिथः–परस्परम् (घ) वृथा–अलम्

(*ii*) 'यूयम् सर्वे एव मम प्रियाः' इत्यत्र 'यूयम्' इति सर्वनामपदस्य प्रयोगः केभ्यः अभवत्?
(क) मानवेभ्यः (ख) खगेभ्यः (ग) जीवेभ्यः (घ) जनेभ्यः

(*iii*) 'सृष्टिरेषा' इति पदस्य सन्धिच्छेदं कृत्वा लिखत।
(क) सृष्टिः + रेषा (ख) सृष्टि + एषा (ग) सृष्टिः + एषा (घ) सृष्टि + रेषा

(*iv*) 'निरर्थकम्' इति पदस्य पर्यायपदम् अनुच्छेदात् एव चित्वा लिखत।
(क) वृथा (ख) मिथः (ग) समयं (घ) मिलित्वा

(*v*) 'आयुष:' इति पदे का विभक्ति:?

(क) षष्ठी (ख) चतुर्थी (ग) तृतीया (घ) द्वितीया

(*vi*) 'अलम् अलम् मिथ: **कलहेन**' इत्यत्र स्थूलपदे का विभक्ति:?

(क) द्वितीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) तृतीया

उत्तराणि– (I) (*i*) जगत्पते: (*ii*) गायन्ति।

(II) (*i*) प्रकृति: सर्वेषाम् जननी अस्ति। (*ii*) जीवनं कलहेन न यापयेत।

(III) (*i*) (ग) मिथ:-परस्परम् (*ii*) (ग) जीवेभ्य: (*iii*) (ग) सृष्टि: + एषा (*iv*) (क) वृथा (*v*) (क) षष्ठी (*vi*) (घ) तृतीया।

पाठ्यपुस्तकस्य अभ्यास: (अनुप्रयोग:)

1. एतेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि उदाहरणम् अनुसृत्य 'आम् अथवा न' साहाय्येन देयानि (मौखिक-अभ्यासार्थम्)

यथा (क) किं 'का का' इति राजहंसस्य ध्वनि:? न

(ख) किं काक: मेध्यम् अमेध्यं वा सर्वमेव भक्षयति? आम्

(ग) किं कुक्कुटा: नगरेषु सर्वत्र सुलभा: एव? ....

(घ) किं राजहंसी श्लोकद्वयं पठति? ....

(ङ) किं बक: श्वेत: भवति? ....

(च) किं वर्षाणाम् अभिनन्दनं बक: करोति? ....

(छ) किं मयूर: एव अस्माकं राष्ट्रपक्षी? ....

(ज) किं मयूर: क्रोधेन प्रविशति? ....

(झ) किं कोकिल: एव मधुमासे आम्रवृक्षे स्थित्वा गायति? ....

(ञ) किं राजहंस: एव नीरक्षीरविवेकी मन्यते? ....

(ट) किं केवलं मयूरेण एव सौंदर्यमयी सृष्टि: एषा? ....

(ठ) किं मिलित्वा एव जीवनं रसमयं कर्तव्यम्? ....

(ड) किं प्रकृते: शोभा सर्वै: पक्षिभि: एव? ....

उत्तराणि– (क) न (ख) आम् (ग) न (घ) न (ङ) आम् (च) आम् (छ) आम् (ज) न (झ) आम् (ञ) आम् (ट) न (ठ) आम् (ड) आम्।

2. अत्र उदाहरणम् अनुसृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत–

यथा (क) राजहंसी **राजहंसं** कथयति यत् काकस्य कर्म अपि कृष्णम्।

(ख) काक: .... कथयति यत् यदि स: (काक:) कृष्णवर्ण: तर्हि श्रीरामस्य वर्ण: कीदृश:?

(ग) राजहंस: .... कथयति यत् एतत् कार्यं तु कुक्कुटोऽपि करोति।

(घ) बक: .... कथयति यत् तस्य किं महत्वम्?

(ङ) मयूर: .... कथयति यत् तस्य ध्यानावस्थाम् को न जानाति?

(च) कोकिल: .... कथयति यत् 'अलम्' अतिविकत्थनेन'।

(छ) काक: .... कथयति यत् स: एव करुणापर: पक्षिसम्राट्!

उत्तराणि– (क) राजहंसम् (ख) राजहंसीम् (ग) काकम् (घ) हंसम् (ङ) बकम् (च) मयूरम् (छ) कोकिलम्।

3. अधोलिखितानां रिक्तस्थानेषु समुचितं पदं लिखत–

यथा (क) राजहंस: **काकस्य** ध्वनिं श्रुत्वा व्याकुल: भवति।

(ख) काक: .... कथनं श्रुत्वा तु क्रुद्ध: भवति परं .... वचनं श्रुत्वा विहसति।

(ग) राजहंसी .... वचनं श्रुत्वा तं 'वाचाल' इति कथयति।

(घ) मयूर: .... वचांसि श्रुत्वा प्रविशति।

(ङ) कोकिल: .... वचांसि श्रुत्वा प्रविशति।

(च) अन्ते .... प्रविशति।

उत्तराणि– (क) काकस्य (ख) राजहंस्या:, राजहंसस्य (ग) काकस्य (घ) बकस्य (ङ) मयूरस्य (च) प्रकृतिमाता।

4. पाठगतश्लोकानां भावस्पष्टीकरणम् उचितपदै: कर्तव्यम्–

(क) यदि .... चञ्चुदेशे माणिक्यरत्नम् अपि भवेत् तथापि स: .... न मन्यते अपितु .... एव। एवमेव यदि .... पक्षा: मणिभि: ग्रथिता: भवेयु: तथापि स: .... एव न ....।

(ख) हंस: श्वेतवर्ण: बकस्य अपि च वर्ण: .... एव। अत: बकहंसयो: वर्णदृष्ट्या कोऽपि न भेद: परं .... एव विवेकशील: मन्यते न तु ....।

(ग) काकस्य वर्ण: कृष्ण: .... अपि वर्ण: ....। एतयो: भेद: तु .... एव ज्ञायते यत् क: .... क: च पिक: अस्ति।

उत्तराणि– (क) काकस्य, राजहंस:, काक:, काकस्य, काक:, राजहंस:।

(ख) श्वेत:, हंस:, बक:।

(ग) पिकस्य, कृष्ण:, वसन्तसमये, काक:।

5. (अ) एतेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि पाठम् आधृत्य एकस्मिन् पदे एव लिखत–

यथा– राजहंसः राजहंसी च काकध्वनिं कस्यां वेलायां शृणुतः? प्रभातवेलायाम्

(क) आत्मप्रशंसायां श्लोकद्वयं कः पठति? ....

(ख) स्वप्रशंसायाम् एकं श्लोकं कः पठति? ....

(ग) हंसस्य बकस्य च कः वर्णः? ....

(घ) मयूरः केन पक्षिराजः कृतः? ....

(ङ) कोकिलः कस्मिन् मासे पञ्चमस्वरेण गायति? ....

(च) कोकिलः कुत्र स्थित्वा पञ्चमस्वरेण गायति? ....

(छ) 'का-का' इति कस्य ध्वनिः? ....

(ज) मातरः कान् कथयन्ति–'अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्'? ....

(झ) केषाम् ऐक्यं जगत्प्रसिद्धम्? ....

(ञ) कः पक्षिराजः? ....

(ट) कस्य ध्यानं प्रसिद्धम्? ....

(ठ) कः नीरक्षीरविवेकी मन्यते? ....

(ड) काकपिकयोः भेदः कदा ज्ञायते? ....

(ढ) कीदृशी सृष्टिः एषा? ....

(ण) पक्षिणां जननी का? ....

(त) केन समयः वृथा न यापयितव्यः? ....

(थ) रसमयं किं कर्त्तव्यम्? ....

उत्तराणि– (क) राजहंसः (ख) कोकिलः (ग) श्वेतः (घ) विधात्रा (ङ) मधुमासे (च) आम्रवृक्षे (छ) काकस्य (ज) शिशून् (झ) काकानाम् (ञ) मयूरः (ट) बकस्य (ठ) हंसः (ड) वसन्तसमये (ढ) रमणीया (ण) प्रकृतिः (त) कलहेन (थ) जीवनम्।

(आ) उदाहरणम् अनुसृत्य उपरिलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणां प्रयोगेन इमम् अनुच्छेदं पूर्यन्ताम्–

.... निर्मिता एषा सृष्टिः .... एव। .... तु सर्वत्र सौन्दर्यम् एव दृश्यते। सरस्तीरे .... च विहरतः, ... नृत्यति, ... शोभा चित्तं हरति, ... अपि ध्वनिः यत्र-तत्र श्रूयते। माता .... प्रबोधयति। .... तु यदा .... स्थित्वा गायति तदा .... रसमयम् एव भवति। अद्भुता सौन्दर्यमयी ....एषा। अतः आनन्देन यापनीयं जीवनं न तु ....।

उत्तराणि– विधात्रा, रमणीया, प्रभातवेलायां, राजहंसः, राजहंसी, मयूरः, प्रकृतेः, काकानाम्, शिशून्, कोकिलः, आम्रवृक्षे, जीवनम्, सृष्टिः, कलहेन।

6. निम्नलिखितकथनेषु स्थूलानि सर्वनामपदानि 'कस्मै प्रयुक्तानि' इति लिखत–

कथनानि	**कस्मै प्रयुक्तम् सर्वनामपदम्**
यथा–सर्वथा जागरूकः **अहम्**	काकाय
(क) सरस्तीरे विहरति **मयि**	राजहंसाय
(ख) कथं **माम्** अधिक्षिपसि	....
(ग) **अहमे**वात्र वृष्टेः अभिनन्दनं करोमि	....
(घ) **मम** नृत्यं तु प्रकृतेः आराधना	....
(ङ) **अहं** पञ्चमस्वरेण गायामि	....
(च) **अहमेव** सर्वशिरोमणिः	....
(छ) सर्वैः एव **मे** शोभा	....
(ज) **अहमेव** नीरक्षीरविवेकी	....

उत्तराणि– (क) राजहंसाय (ख) बकाय (ग) बकाय (घ) मयूराय (ङ) कोकिलाय (च) बकाय (छ) प्रकृतये (ज) राजहंसाय।

7. उदाहरणम् अनुसृत्य वाक्यपरिवर्तनं कुरुत–

यथा–अहं प्रभाते सुप्तान् प्रबोधयामि।	**काकः प्रभाते सुप्तान् प्रबोधयति।**
(क) अहमेव राष्ट्रपक्षी।	**मयूरः एव राष्ट्रपक्षी।**
(ख) अहमेव सुप्तान् कर्मसु विनियोजयामि।	....
(ग) अहं वृष्टेः अभिनन्दनं करोमि।	....
(घ) आम्रवृक्षे अहं पञ्चमस्वरेण गायामि।	....
(ङ) कोकिलस्य सन्ततिं तु अहमेव पालयामि।	....
(च) अहमेव सर्वेषां पक्षिणां जननी अस्मि।	....
(छ) विधात्रा एव अहं पक्षिराजः कृतः।	....

उत्तराणि– (क) मयूरः एव राष्ट्रपक्षी। (ख) काकः एव सुप्तान् कर्मसु विनियोजयति। (ग) बकः वृष्टेः अभिनन्दनं करोति। (घ) आम्रवृक्षे कोकिलः पञ्चमस्वरेण गायति। (ङ) कोकिलस्य सन्ततिं तु काकः एव पालयति। (च) प्रकृतिः एव सर्वेषां पक्षिणां जननी अस्ति। (छ) विधात्रा एव मयूरः पक्षिराजः कृतः।

8. केन कथितानि एतानि कथनानि?

कथनानि	वक्ता
(क) अहं तु अतीव कर्तव्यपरायण:।	....
(ख) नीरक्षीरविवेके तु हंसो हंस: बको बक:।	....
(ग) दुग्धधवला: मे पक्षा:।	....
(घ) अहमेव सर्वशिरोमणि:।	....
(ङ) सर्वेषामेव महत्त्वं विद्यते यथासमयम्।	....
(च) मम केकारवं श्रुत्वा कोकिल: अपि लज्जते।	....
(छ) अलम् अतिविकत्थनेन।	....
(ज) अस्य वर्ण: अपि कृष्ण: कर्म अपि कृष्णम्।	

उत्तराणि– (क) काकेन (ख) राजहंसेन (ग) बकेन (घ) मयूरेण (ङ) प्रकृत्या
(च) मयूरेण (छ) कोकिलेन (ज) राजहंस्या।

9. अस्मिन् पाठे पञ्चे पक्षिणां प्रवेशक्रमनिर्धारणं क्रियताम्–

	क्रम:	पक्षिण:
यथा–	प्रथम:	काक:
	द्वितीय:	कोकिल:
	तृतीय:	बक:
	चतुर्थ:	मयूर:
	पञ्चम:	राजहंस:
उत्तराणि–	प्रथम:	राजहंस:
	द्वितीय:	काक:
	तृतीय:	बक:
	चतुर्थ:	मयूर:
	पञ्चम:	कोकिल:

10. अत्रलिखितशब्दानां साहाय्येन निर्दिष्टपक्षिण: वैशिष्ट्यं त्रिषु वाक्येषु लिखत–

कृष्णवर्ण:, ऐक्यम्, करुणापर:

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

उत्तराणि– (क) काक: कृष्णवर्ण: भवति।
(ख) काकानाम् ऐक्यम् जगत्प्रसिद्धम् अस्ति।
(ग) करुणापर: काक: आत्मानम् पक्षिराज: कथयति।

राष्ट्रपक्षी, सौन्दर्यम्, राजमुकुटम्

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

उत्तराणि– (क) मयूरः भारतस्य राष्ट्रपक्षी अस्ति।
(ख) मयूरस्य सौन्दर्यम् अद्वितीयं भवति।
(ग) मयूरस्य शिखा राजमुकुटम् इव शोभते।

11. (क) 'अलम्' इति निषेधात्मकम् अव्ययम्। अस्य प्रयोगे तृतीया विभक्तिः एव प्रयुज्यते।'' इति एतस्य कथनस्य प्रमाणे अस्मात् पाठात् वाक्यद्वयं विचित्य अत्र लिखत–

(i) ....

(ii) ....

उत्तरत–(i) अलमलं मिथः कलहेन। (ii) अलम् अतिविकत्थनेन।

(ख) 'धिक्' इति योगे द्वितीया भवति। पाठात् विचित्य वाक्यद्वयम् अत्र लिखत।

(i) ....

(ii) ....

उत्तरत–(i) धिक् युष्मान्। (ii) धिक् त्वाम्।

(ग) यत्र 'यदि' इति प्रयुज्यते तत्र 'तर्हि' इति अपि प्रयुज्यते पाठात् विचित्य वाक्यद्वयम् अत्र लिखत।

(i) ....

(ii) ....

उत्तरत– (i) यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि श्रीरामस्य वर्णः कीदृशः?
(ii) यदि अहम् तव सन्ततिं न पालयामि तर्हि कुत्र स्युः पिकाः?

'यदि-तर्हि' इति अनयोः प्रयोगः 'कार्य-कारण' इति भावे भवति। अस्मिन् भावे एव 'चेत्' इति अव्ययस्य प्रयोगः अपि क्रियते।

यथा– यदि वसन्तर्तुः अस्ति तर्हि कोकिलः गायति।
वसन्तर्तुः अस्ति चेत् कोकिलः गायति।

उपर्युक्त-अभ्यास (11.ग) वाक्ययोः 'कारण-कार्य' इति भावे 'चेत्' प्रयोगेन **एकं वाक्यम् अत्र लिखत**
....

उत्तरम्–अहं कृष्णवर्णः अस्मि चेत् कीदृशः श्रीरामस्य वर्णः।

योग्यता-विस्तारः
(न परीक्षाकृते)

हंसः

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरं नीरजमण्डितम्।
रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना ॥1॥
यत्रोदकं तत्र वसन्ति हंसाः तथैव शुष्कं परिवर्जयन्ति।
न हंसतुल्येन नरेण भाव्यम्, पुनस्त्यजन्ति पुनराश्रयन्ते ॥2॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–यद्यपि सब तरफ कमलों से सुशोभित जल है, फिर भी राजहंस का मन मानसरोवर के बिना कहीं नहीं लगता। जहाँ पानी होता है, वहाँ हंस रहते हैं, उसी प्रकार सूख जाने पर उसे त्याग देते हैं। मनुष्य को हंस के समान नहीं होना चाहिए, जो बार-बार त्यागते हैं, बार-बार आश्रय लेते हैं।

कोकिलः

काकैः सह विवृद्धस्य कोकिलस्य कला गिरः।
खलसङ्गेऽपि नैष्ठुर्यं कल्याणप्रकृतेः कुतः ॥3॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–कौओं के साथ बड़ी होने पर भी कोयल की वाणी में कला होती है। दुष्टों की संगति में रहने पर भी कल्याणकारी स्वभाव की निष्ठुरता कहाँ से?

बकः

न कोकिलानामिव मञ्जु कूजितं।
न लब्धलास्यानि गतानि हंसवत्।
न बर्हिणानामिव चित्रपक्षता
गुणस्तथाप्यस्ति बके बकव्रतम् ॥4॥
इन्द्रियाणि च संयम्य बकवत् पण्डितो नरः।
देशकालबलं ज्ञात्वा सर्वकार्याणि साधयेत् ॥5॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–न कोयलों के समान मधुर ध्वनि है, न हंस के समान सुंदर चाल है, न मोरों के समान रंग-बिरंगे सुंदर पंख हैं फिर भी बगुले में भी उसका अपना एक गुण 'बगुले का व्रत' तो है।

विद्वान पुरुष बगुले के समान अपनी इन्द्रियों को वश में करके देश और काल की शक्ति को जानकर अपने सभी कार्य सम्पन्न करें।

काकः

तुल्यवर्णच्छदः कृष्णः कोकिलैः सह सङ्गतः।
केन विज्ञायते काकः स्वयं यदि न भाषते ॥6॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–कोयलों के साथ ही रहने वाले कौए का रंग, बाहरी रूप (पंख) सब एक समान होते हैं। यदि कौआ स्वयं न बोले तो कौन जान सकता है कि वह कौआ है।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तराणि

1. (आ) अधोलिखितनाट्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत– **5**

स्थानम् – सरस्तीरम्, **समयः**-प्रभातवेला, तत्र राजहंसः राजहंसी च विहरतः। नेपथ्ये काकध्वनिः श्रूयते।

राजहंसः – अये! किन्तु खलु सरस्तीरे विहरति मयि केनापि कर्कशैः 'का का' शब्दैः वातावरणम् आकुलीक्रियते?

राजहंसी – भर्तः! काकात् अन्यत् का भवितुमर्हति? अस्य वर्णः अपि कृष्णः, कर्म अपि कृष्णम्। मेध्यम् अमेध्यं सर्वमेव भक्षयति। कर्णकटुशब्दैः–

काकः – (प्रविश्य, सक्रोधम्) आः किमुक्तवती भवती? यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि श्रीरामस्य वर्णः कीदृशः?

राजहंसः – हुं! किमनेन? एतत् कार्यं तु कुक्कुटोऽपि करोति।

काकः – (विहस्य) कुक्कुट! अरे अद्य कुतः कुक्कुटा नगरेषु। अहमेव सर्वत्र सुलभः।

राजहंसी – भोः भो वाचाल! स्वीयैः कटुभिः क्वणितैः जनजागरणात् अन्यत् तु किमपि न करोषि।

I. एकपदेन उत्तरत– **½ × 2 = 1**

(*i*) काकः कस्याः वचनं श्रुत्वा क्रुध्यति?

(*ii*) राजहंसः हंसी च कुत्र विहरतः स्म?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत– **1 × 2 = 2**

(*i*) कुक्कुटः कान् प्रबोधयति?

(*ii*) अत्र कति पात्राणि वार्तालापं कुर्वन्ति?

III. भाषिककार्यम्– **½ × 4 = 2**

(*i*) 'अर्हति' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

(क) का (ख) अन्यत् (ग) काकात् (घ) भवितुम्

(*ii*) 'अहमेव सर्वत्र सुलभः' इत्यत्र 'अहं' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) मयूराय (ख) बकाय (ग) काकाय (घ) राजहंसाय

(*iii*) 'दुर्लभः' इति पदस्य कः विपर्ययः संवादे प्रयुक्तः?

(क) दुर्लभः (ख) सुलभः (ग) सुदुर्लभः (घ) अलभ्यः

(*iv*) संवादे 'स्वरैः' इत्यस्य पदस्य कः पर्यायः आगतः?

(क) कटुशब्दैः (ख) क्वणितैः (ग) गर्जनैः (घ) वर्णैः

उत्तराणि– I. (*i*) राजहंस्याः (*ii*) सरस्तीरे

II. (*i*) कुक्कुटः सुप्तान् प्रबोधयति। (*ii*) अत्र त्रीणि पात्राणि वार्तालापं कुर्वन्ति।

III. (*i*) (क) का (*ii*) (ग) काकाय (*iii*) (ख) सुलभः (*iv*) (ख) क्वणितैः।

(आ) अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत– **5**

बकः (प्रविश्य, स्वपक्षौ अवधूय) कथं माम् अपि अधिक्षिपसि। किं ते महत्त्वम्? वर्षतौं तु मानसं पलायसे। अहम् एव अत्र वृष्टेः अभिनन्दनं करोमि। कीदृशी तव मैत्री? आपत्काले सरांसि त्यक्त्वा दूरं व्रजसि। वस्तुतः अहमेव शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलं ध्यानमग्नः 'स्थितप्रज्ञ' इव तिष्ठामि। दुग्धधवला मे पक्षाः। न जाने कथं माम् अपरिगणयन्तः जनाः चित्रवर्णं अहिभुजं मयूरं 'राष्ट्र-पक्षी' इति मन्यन्ते। अहमेव योग्यः।

मयूरः (प्रविश्य साट्टहासम्) सत्यं सत्यम्। अहमेव राष्ट्रपक्षी। को न जानाति तव ध्यानावस्थाम्? मौनं धृत्वा वराकान् मीनान् छलेन अधिगृह्य, क्रूरतया भक्षयसि। धिक् त्वाम्! अवमानितं खलु सर्वं पक्षिकुलं त्वया।

काकः रे सर्पभक्षक! नर्तनात् अन्यत् किम् अपरं जानासि?

मयूरः श्रूयतां श्रूयताम्! मम नृत्यं तु प्रकृतेः आराधना। पश्य! चारुवर्तुलचंद्रिकाशोभितानां मम पिच्छानाम् अपूर्वं सौन्दर्यम्। मम केकारवं श्रुत्वा कोकिलः अपि लज्जते। मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा एव अहं पक्षिराजः कृतः।

(I) एकपदेन उत्तरत– **½ × 4 = 2**

(*i*) मयूरस्य नृत्यं कस्याः आराधना?

(*ii*) हंसः कदा मानसं पलायते?

(*iii*) मयूरः केन पक्षिराजः कृतः?

(*iv*) केन पक्षिकुलम् अवमानितम्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– **1 × 1 = 1**

बकः मीनान् कथं भक्षयति?

(III) यथानिर्देशम् उत्तरत– **½ × 4 = 2**

(*i*) 'दुग्धधवला मे पक्षाः' अस्मिन् वाक्यांशे किम् विशेषणपदम्?

(क) मे (ख) दुग्धधवला (ग) धवला (घ) पक्षाः

(*ii*) अहमेव योग्यः। अत्र 'अहम्' पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) बकाय (ख) काकाय (ग) मयूराय (घ) राजहंसाय

(*iii*) 'रे सर्पभक्षक!' इति कथयित्वा काकः कम् सम्बोधयति?

(क) बकम् (ख) हंसम् (ग) हंसीम् (घ) मयूरम्

(*iv*) 'तिरस्कृतम्' इति अस्मिन् अर्थे किं क्रियापदं नाट्यांशे प्रयुक्तम्?

(क) सम्मानितम् (ख) उपमानितम् (ग) अवमानितम् (घ) अपमानितम्

उत्तराणि– I. (*i*) प्रकृते: (*ii*) वर्षर्तौ (*iii*) विधात्रा (*iv*) बकेन

II. बक: मीनान् छलेन अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयति।

III. (*i*) (ख) दुग्धधवला (*ii*) (क) बकाय (*iii*) (घ) मयूरम् (*iv*) (ग) अवमानितम्

2. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं पुन: लिखत– **½ × 8 = 4**

(*i*) युष्माभि: एव मे शोभा अत: यूयम् सर्वे मम प्रिया:।

(*ii*) ते सर्वे आत्मन: महत्त्वं प्रतिपादयन्त: अन्योऽन्यान् निन्दन्ति।

(*iii*) एकदा प्रभाते राजहंस: राजहंसी च सरस्तीरे भ्रमत:।

(*iv*) निन्दां श्रुत्वा काक: तत्रागत्य आत्मानं प्रशंसति।

(*v*) अत: कलहं विहाय परस्परं मोदध्वम्, जीवनं च रसमयं कुरुध्वम्।

(*vi*) तदा बक:, मयूर:, पिक: च क्रमेण तत्र आगच्छन्ति।

(*vii*) अन्ते प्रकृतिमाता तत्रागत्य सर्वान् कथयति।

(*viii*) तौ काकस्य ध्वनिं श्रुत्वा तस्य निन्दां कुरुत:।

उत्तराणि– (*i*) एकदा प्रभाते राजहंस: राजहंसी च सरस्तीरे भ्रमत:।

(*ii*) तौ काकस्य ध्वनिं श्रुत्वा तस्य निन्दां कुरुत:।

(*iii*) निन्दां श्रुत्वा काक: तत्रागत्य आत्मानं प्रशंसति।

(*iv*) ते सर्वे आत्मन: महत्त्वं प्रतिपादयन्त: अन्योऽन्यान् निन्दन्ति।

(*v*) अन्ते प्रकृतिमाता तत्रागत्य सर्वान् कथयति।

(*vi*) युष्माभि: एव मे शोभा अत: यूयम् सर्वे मम प्रिया:।

(*vii*) अत: कलहं विहाय परस्परं मोदध्वम्, जीवनं च रसमयं कुरुध्वम्।

(*viii*) तदा बक:, मयूर:, पिक: च क्रमेण तत्रं आगच्छन्ति।

3. निम्नलिखितकथनयो: भावं उपयुक्त पदै: पूरयत– **4**

(उचितशब्दानां चयनं मञ्जूषात: एवं कुरुत)

(अ) काक: कृष्ण: पिक: कृष्ण: को भेद: पिककाकयो:। **1 × 4 = 4**
वसन्तसमये प्राप्ते काक: काक: पिक: पिक:॥

यदा (*i*) .... आगच्छति तदा पिकस्य मधुरेण (*ii*) .... ज्ञायते यत् द्वयो: मध्ये क: (*iii*) .... अस्ति। अन्यथा द्वयो: एव वर्ण: (*iv*) .... एव भवति।

मञ्जूषा– भेद:, स्वरेण, कृष्ण:, वसन्तसमय:।

उत्तराणि–(*i*) वसन्तसमय: (*ii*) स्वरेण (*iii*) भेद: (*iv*) कृष्ण:।

(आ) आयुष: क्षणमेकोऽपि, न लभ्य: स्वर्णकोटिकै:। **1 × 4 = 4**
स चेन्निरर्थकं नीत:, का नु हानिस्ततोऽधिका॥

भाव:–अस्माकं जीवनम् अमूल्यम् अस्ति। अत: अस्माभि: (*i*) .... प्रत्येकं क्षणस्य सदुपयोग: कर्त्तव्य:। यतो हि अयं क्षण: अस्माभि: (*ii*) .... अपि पुन:, लब्धुं न शक्यते। गत: समय: न पुन: प्रत्यागच्छति। अत: (*iii*) .... अधिका काऽपि अन्या (*iv*) .... न अस्ति।

मञ्जूषा– हानि:, स्वर्णकोटिकै:, आयुष:, क्षणनाशात्।

उत्तराणि–(*i*) आयुष: (*ii*) स्वर्णकोटिकै: (*iii*) क्षणनाशात् (*iv*) हानि:

4. निम्नलिखितश्लोकयोः भावम् उपयुक्तशब्दैः पूरयित्वा भावार्थं पुनः लिखत। उपयुक्तानां शब्दानां चयनं मञ्जूषायाः एव कर्त्तव्यम्। $1 \times 4 = 4$

काकस्य गात्रं यदि काञ्चनस्य माणिक्यरत्नं यदि चञ्चुदेशे।
एकैकपक्षे ग्रथितं मणीनां तथापि काको न तु राजहंसः॥

अस्य श्लोकस्य भावः अस्ति यदि काकस्य (*i*) .... माणिक्यरत्नम् अपि भवेत् तथापि सः (*ii*) .... न मन्यते अपितु काकः एव भवति। एवमेव यदि (*iii*) .... पक्षाः मणिभिः अपि ग्रथिताः भवेयुः तथापि सः (*iv*) .... एव तिष्ठति।

मञ्जूषा– राजहंसः, काकस्य, चञ्चुदेशे, काकः।

उत्तराणि–(*i*) चञ्चुदेशे (*ii*) राजहंसः (*iii*) काकस्य (*iv*) काकः।

5. अधोलिखितकथनेषु रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य उदाहरणानुसारम् प्रश्ननिर्माणम् कुरुत– $1 \times 4 = 4$

(*i*) अहम् प्रकृतिः एव युष्माकं जननी।
(क) कः (ख) काम् (ग) कासाम् (घ) केषाम्

(*ii*) सर्वथा जागरूकः काकः छात्राणाम् कृते आदर्शः।
(क) केषाम् (ख) कासाम् (ग) काम् (घ) कम्

(*iii*) नेपथ्ये काकध्वनिः श्रूयते।
(क) कदा (ख) कस्मिन् (ग) कुत्र (घ) के

(*iv*) सर्वे जीवाः परस्परं भावयन्तः मोदन्ताम्।
(क) काः (ख) के (ग) कः (घ) का

उत्तराणि– (*i*) (घ) केषाम् (*ii*) (क) केषाम् (*iii*) (ग) कुत्र (*iv*) (ख) के

6. अधोलिखितासु पंक्तिषु स्थूलाक्षरपदानाम् प्रसङ्गानुसारम् शुद्धम् अर्थं चिनुत– $1 \times 4 = 4$

(*i*) अलं अलं **मिथः** कलहेन।
(क) मिथ्या (ख) परस्परम् (ग) मिथुनः (घ) मिष्ठान्नम्

(*ii*) मम **केकारवं** श्रुत्वा कोकिलः अपि लज्जते।
(क) काकस्य स्वरं (ख) मयूरस्य ध्वनिं (ग) कुक्कुटस्य शब्दम् (घ) कण्टकतरुः

(*iii*) स्वीयैः कटुभिः **क्वणितैः** जनजागरणात् अन्यत् तु किमपि न करोषि।
(क) कणैः-कणैः (ख) क्व-क्व-शब्दैः (ग) अस्पष्टशब्दैः (घ) कां-कां स्वरैः

(*iv*) दुग्धधवलाः **मे** पक्षाः।
(क) मम (ख) माम् (ग) महयम् (घ) मयि

उत्तराणि– (*i*) (ख) परस्परम् (*ii*) (ख) मयूरस्य ध्वनिं (*iii*) (ग) अस्पष्टशब्दैः (*iv*) (क) मम

7. अधोलिखितश्लोकस्य अन्वयं समुचितक्रमेण पूरयत– $1 \times 4 = 4$

आयुषः क्षणमेकोऽपि, न लभ्यः स्वर्णकोटिकैः।
स चेन्निरर्थकं नीतः, का नु हानिस्ततोऽधिका॥

अन्वयः–आयुषः (*i*) .... अपि क्षणम् स्वर्णकोटिकैः न (*ii*) .... चेत् सः (*iii*) .... नीतः ततः (*iv*) .... का नु हानिः?

उत्तराणि– (*i*) एकः (*ii*) लभ्यः (*iii*) निरर्थकं (*iv*) अधिका

8. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरपुस्तिकायाम् उत्तरत– 5

काकः – (प्रविश्य, सक्रोधम्) आः! किम् उक्तवती भवती। यदि अहं कृष्णवर्णः, तर्हि श्रीरामस्य, कृष्णस्य वर्णः कीदृशः? अहं का-का-ध्वनिना प्रभाते सुप्तान् प्रबोधयामि कर्मसु च विनियोजयामि।

राजहंस – हुँ! किमनेन? एतत् कार्यं तु कुक्कुटोऽपि करोति।

काकः – (विहस्य) कुक्कुटः। अरे अद्य कुतः कुक्कुटाः नगरेषु। अहमेव सर्वत्र सुलभः।

राजहंसीः – भो भो वाचाल! स्वीयै कटुभिः क्वणितैः जनजागरणात् अन्यत् तु किमपि न करोषि।

काकः – अहो अज्ञानं भवत्याः यस्य गृहस्य भितौ स्थित्वा आलपामि, जनाः प्रियस्य आगमन-संकेतं मत्वा हृष्यन्ति। अस्माकं ऐक्यं तु जगत्प्रसिद्धम्। मातरः शिशून् प्रायः कथयन्ति, "अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्।"

प्रश्नाः (Questions)

I. एकपदेन उत्तराणि उत्तरपुस्तिकायां लिखत– ½ × 4 = 2

(*i*) काकः प्रभाते केन ध्वनिना सुप्तान् प्रबोधयति?

(*ii*) राजहंसी काकं किं सम्बोधयति?

(*iii*) अद्य नगरेषु के न दृश्यन्ते?

(*iv*) यदा काकः गृहभित्तौ आलपति तदा जनाः प्रियस्य किं मत्वा हृष्यन्ति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरम् उत्तरपुस्तिकायां लिखत– 1 × 1 = 1

मातरः काकविषये शिशून् किं कथयन्ति?

III. निर्देशानुसारम् उत्तराणि उत्तरपुस्तिकायां लिखत– ½ × 4 = 2

(*i*) "कटुभिः क्वणितैः" अत्र किं विशेष्यपदम्?

(क) क्वणितैः (ख) क्वणितः (ग) कटुः (घ) कटुभिः

(*ii*) "अहो अज्ञानं भवत्याः" अत्र 'भवत्याः' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) हंसाय (ख) बकाय (ग) मयूराय (घ) राजहंस्यै

(*iii*) "सत्यम्" अस्य विलोमपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत।

(क) मिथ्या (ख) ऋतम् (ग) अनृतम् (घ) असत्यम्

(*iv*) 'कार्येषु' अस्य किम् पर्यायवाचिपदं नाट्यांशे प्रयुक्तम्?

(क) कर्मेषु (ख) कर्मसु (ग) कर्मासु (घ) कर्मेशु

उत्तराणि– I. (*i*) का-का-ध्वनिना (*ii*) वाचाल (*iii*) कुक्कुटाः (*iv*) आगमन-संकेतम्

II. मातरः काकविषये शिशून् कथयन्ति, "अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्"।

III. (*i*) (क) क्वणितैः (*ii*) (घ) राजहंस्यै (*iii*) (ग) अनृतम् (*iv*) (ख) कर्मसु

9. अधोलिखित श्लोकस्य भावम् मञ्जूषायाः उपयुक्तपदैः पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायां लिखत– 1 × 4 = 4

अधुना रमणीया हि, सृष्टिरेषा जगत्पतेः।
जीवाः सर्वेऽत्र मोदन्तां, भावयन्तः परस्परम्॥

भावः–ईश्वरेण रचिता एषा (*i*) .... अतीव रमणीया अस्ति। मम हार्दिकी (*ii*) .... यत् यूयं (*iii*) .... जीवाः अन्योन्यं सम्मानं कुर्वन्तः अस्मिन् सुन्दरे संसारे प्रेम्णा वसत (*iv*) .... च।

मञ्जूषा– सर्वे, मोदध्वं, सृष्टिः, कामना

उत्तराणि–(*i*) सृष्टिः (*ii*) कामना (*iii*) सर्वे (*iv*) मोदध्वं।

10. निम्नश्लोकस्य अन्वयं पूरयित्वा पुनः उत्तरपुस्तिकायां लिखत– ½ × 4 = 2

अधुना रमणीया हि, सृष्टिरेषा जगत्पतेः।
जीवाः सर्वेऽत्र मोदन्तां, भावयन्तः परस्परम्॥

अन्वयः–एषा जगत्पतेः (*i*) .... हि अधुना (*ii*) .... सर्वे जीवाः अत्र (*iii*) .... भावयन्तः (*iv*) .... ॥

उत्तराणि–(*i*) सृष्टिः (*ii*) रमणीया (*iii*) परस्परम् (*iv*) मोदन्ताम्।

11. निम्न 'क' वर्गस्य विशेषण पदैः सह 'ख' वर्गस्य समुचितानि विशेष्य पदानि संयोज्य पुनर्लिखत– ½ × 8 = 4

'क'	'ख'
(1) कृष्णम्	(क) बकः
(2) रमणीया	(ख) स्थितप्रज्ञः
(3) जगत्प्रसिद्धम्	(ग) विधात्रा
(4) कटुभिः	(घ) सृष्टिः
(5) श्वेतः	(ङ) सौन्दर्यम्
(6) ध्यानमग्नः	(च) कर्म
(7) अपूर्वम्	(छ) ऐक्यम्
(8) स्थापयता	(ज) क्वणितैः

उत्तराणि– (1) (च) कर्म (2) (घ) सृष्टिः (3) (छ) ऐक्यम् (4) (ज) क्वणितैः (5) (क) बकः (6) (ख) स्थितप्रज्ञः (7) (ङ) सौन्दर्यम् (8) (ग) विधात्रा।

मूल्यपरक प्रश्नाः (VBQs)

वाक्यानि पठित्वा वाक्याधारितान् प्रश्नाम् उत्तरत–

प्रश्नाः (*i*) 'अस्य वर्णः अपि कृष्णः कर्म अपि कृष्णम्।' इति वाक्ये कस्य वर्णस्य वर्णनम् अस्ति?

(*ii*) 'यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि श्रीरामस्यवर्णः कीदृशः? श्रीवासुदेवस्य वर्णः कीदृशः? इति वाक्ये कः वर्णस्य निस्सारतां कथयति?

(*iii*) 'अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्।' अत्र असत्यस्य फलरूपे कः दशति इति वर्णितम्?

(*iv*) 'आपत्काले सरांसि त्यक्त्वा दूरं व्रजसि।' अत्र सरांसि कष्टं दृष्ट्वा हंसः कुत्र धावति इति लिखितम्?

(*v*) 'न तावत् कलहेन समयं वृथा यापयेत। मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं कुरूध्यम्।' अत्र वाक्ये किं दुःखस्य कारणं कथितम्?

उत्तराणि– (*i*) काकस्य (*ii*) काकः (*iii*) काकः (*iv*) दूरम् (*v*) कलहम्